P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-9* May- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

मोहन राकेश के नाटकों में स्त्री–पुरुष सम्बन्ध : विघटन और जुड़ाव

Male-Female Relationship in Mohan Rakesh's Plays: Dissolution and Engagement

Paper Submission: 15/05/2020, Date of Acceptance: 25/05/2020, Date of Publication: 30/05/2020

गोपीराम शर्मा
सहायक प्रोफेसर (शोध निर्देशक)
हिन्दी विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

मुकेश कुमार
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
डॉ0 भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय,
श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत

सारांश

डॉ0 मोहन राकेश ने अपने सुप्रसिद्ध तीनों नाटकों से खुद के जीवन की भोगी हुई समस्याओं को ही नाटकों का मूल कथ्य बनाया है। उन्होंने अपने नाटकों में आधुनिक समाज और समय की चिंताओं को उद्घाटित किया है तथा आधुनिक समाज की चिंताओं को इस शोध कार्य में दर्शाते हुए भारतीय मूल्यों में आये परिवर्तन के कारण परिवार और समाज का ढांचा प्रभावित होता दृष्टिगोचर हो रहा है। स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों में टूटन, बिखराव, द्वन्द व जुड़ाव के कारणों की व्याख्या की गई है। समाज और परिवार को एक नई दिशा देने का प्रयास किया गया है।

Dr. Mohan Rakesh, with his famous three plays, has made the problems of his own life the core of the plays. He has highlighted the concerns of modern society and time in his plays and reflecting the concerns of modern society in this research work, the change in Indian values is being affected due to the change in family and society. The reasons for breakdown, conflict, conflict and engagement have been explained in the relationship between men and women. An attempt has been made to give a new direction to the society and the family.

मुख्य शब्द : विघटन, जुड़ाव, द्वन्द्व, विडम्बना, त्रासदी, अन्तर्द्वन्द्व, व्यक्तित्व, तलाश, पूर्णता, कामोत्सव, विवशता आदि।

Disintegration, Connectedness, Conflict, Irony, Tragedy, Senselessness, Personality, Discovery, Fulfillment, Orgasm, Helplessness, etc.

प्रस्तावना

मोहन राकेश ने जितने भी नाटकों की रचना की है उन सब में स्त्री की भूमिका महत्त्वपूर्ण है। सन् 1958 में प्रकाशित उनका प्रथम पूर्णकालिक नाटक 'आषाढ़ का एक दिन' है जिसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं है कि यह कालिदास पर केन्द्रित नाटक है परन्तु इसी नाटक में मल्लिका को भी केन्द्र में रखा गया है। यह स्पष्ट पता चलता है कि नाटक की लोकप्रियता का मुख्य कारण मल्लिका ही है। मल्लिका को जिंदगी भर दु:खो का सामना करना पड़ता है क्योंकि जिस आदमी से वह अत्यधिक मोहब्बत करती है उसी को वह अपनी जिंदगी से अलग करने पर मजबूर हो जाती है। वह अपनी मोहब्बत अर्थात् कालिदास के लिए उसके सुनहरे भविष्य में काँटा बनकर नहीं रहना चाहती है। लेकिन कालिदास के लिए वह आस्था रूपी प्रेरक के रूप में हमेशा साथ बनी रहती है। उसके अनन्य प्रेम पर उसे अटूट विश्वास था, लेकिन उसके भाग्य में शायद दु:ख सहना ही लिखा था। यही वजह है कि दर्शकों की पूरी सहानुभूति उसे मिलती है। कालिदास कहता भी है कि "मैं अनुभव करता हूं यह ग्रामप्रांतर मेरी वास्तविक भूमि है मैं कई सूत्रों से इस भूमि से जुड़ा हूं। उन सूत्रों में तुम हो, यह आकाश और यह मेघ है, यहां की हरियाली है, हरिणों के बच्चे, पशुपालक है।"[1] समय के पहिये के चक्र में मल्लिका पिस जाती है। इस नाटक में बाहरी संघर्ष के बजाय आन्तरिक संघर्ष अधिक विद्यमान है। इस नाटक में खासकर मल्लिका के मानसिक विघटन और जुड़ाव को देखकर भावनाओं, मनोवृतियों आदि का संघर्ष प्रस्तुत हुआ है।

1963 में प्रकाशित 'लहरों के राजहंस' नाटक में मोहन राकेश ने आधुनिक जीवन में व्यक्ति की दुविधा से भरी मानसिक स्थिति को प्रस्तुत किया है। स्त्री और पुरुष के इस विघटन और जुड़ाव की स्थिति को स्पष्ट करने के लिये इन्होंने नंद और सुंदरी को माध्यम बनाया है। इतना ही नहीं, बल्कि इन पात्रों के माध्यम से स्त्री–पुरुष संबंधों की सामान्य नियति को ढूँढ़ने का प्रयत्न भी हुआ है। इस नाटक का केन्द्र पात्र सुंदरी है, सुंदरी को अपने शारीरिक सौंदर्य पर अत्यधिक गर्व है इसलिए वह कामोत्सव का आयोजन करती है। उसे यह भी पूर्ण विश्वास है कि उसका सौंदर्य किसी को भी सम्मोहित करने वाला है खासकर उसके मन में यह बात रुढ़ हो गई है कि नंद उसके प्रेम और सौंदर्य से कभी मुक्त नहीं हो सकता है। इसलिए नंद उसके सामने घुटन महसूस करता है। नाटक में सुंदरी और गौतम बुद्ध के बीच में संघर्ष होता है और इनमें हार–जीत का निर्णय नंद के माध्यम से होता है। नाटक के प्रत्येक अंक में सुंदरी को पराजय का मुँह देखना पड़ता है। सुंदरी नाटक के प्रथम अंक में यशोधरा को नीचा दिखाने के लिए कामोत्सव का आयोजन करती है लेकिन कोई भी व्यक्ति उसमें भाग नहीं लेता है, बल्कि सभी यशोधरा के दीक्षा समारोह में भाग लेते है। वहीं दूसरे अंक में नंद सुंदरी के सौंदर्य और सम्मोहन में बंधे होने के बावजूद गौतम बुद्ध की ओर आकर्षित होता है। तीसरे अंक में नंद ठीक समय पर वापस नहीं लौटता है लेकिन जब लौटता है तो नंद नहीं बल्कि "गौतम बुद्ध" बनकर लौटता है। इसलिए सुंदरी को प्रत्येक बार हार का सामना करना पड़ता है। उसने अलका से कहा था। "देवी यशोधरा का आकर्षण यदि राजकुमार सिद्धार्थ को बाँधकर अपने पास रख सकता, तो क्या वे आज राजकुमार सिद्धार्थ ही न होते?"[2] सुंदरी ने तो अहंकार में आकर यशोधरा पर व्यंग्य मारा था लेकिन नियति के निर्णय ने उसे ही झुका दिया। सुंदरी को अपने सौंदर्य और सम्मोहन का जो घमंड था समय के चक्र ने उसे ही चूर–चूर कर दिया। सुंदरी को यह पूर्ण विश्वास था कि नंद उसे छोड़कर नहीं जायेगा। नंद के पूछे जाने पर वह कहती है कि ऐसी असम्भव बात क्या वह सोच सकती थी? सुंदरी में इतना अहम् है कि वह किसी के भी आगे झुकना भी नहीं चाहती है। अहम के कारण वह कहती भी है "आप दर्पण रख दीजिए। मुझे विशेषक नहीं बनाना है, नहीं बनाना है, नहीं बनाना है।"[3] जब वह कामोत्सव का आयोजन करती है लेकिन कोई भी व्यक्ति उसमें उपस्थित नहीं होता है तो वह आपे से बाहर हो जाती है तथा कहती है – "अपने उद्वेग का वास्तविक कारण मैं स्वयं हूं। और किसी को यह अधिकार मैं नहीं देती कि वह मेरे उद्वेग का कारण बन सके। आर्य मैत्रेय यदि जाना चाहते है तो इन्हें भी जाने दीजिए। कह दीजिए कि जिनके यहाँ ये होकर आए है, जाते हुए भी एक बार उनके यहाँ होते जाएं। उन सब से कह दें कि मेरे यहाँ आने के लिए किसी कल की प्रतीक्षा में व न रहे। वह कल अब उनके लिए कभी नहीं .....।"[4] इस नाटक में मोहन राकेश ने स्त्री–पुरुष के आपसी विघटन और जुड़ाव तथा आज के मानव की बेचैनी और विवशता को बहुत ही बढ़िया तरीके से चित्रित किया है।

मोहन राकेश का तीसरा नाटक 'आधे–अधूरे' जिसका प्रकाशन 1969 में हुआ था। नर–नारी के बीच के जटिल संबंधों को राकेश ने अपने नाटकों में प्रस्तुत किया है। वे स्त्री–पुरुष संबंधों की विडम्बना, विषमता और त्रासदी, विघटन एवं जुड़ाव आदि का परत–दर–परत विश्लेषण करने में निपुण थे। इस नाटक में अर्थ और काल तथा विघटन और जुड़ाव के भंवर में फँसे आधुनिक मानव को स्पष्ट दिखाया गया है। इस नाटक की पात्र सावित्री पूर्णता की तलाश में है लेकिन विडंबना यह है कि उसका जीवन अंत तक अधूरा ही रहता है। वह उसी प्रकार के माहौल में जीवन यापन करने के लिए विवश होती है। इस प्रकार का दमघोटू जीवन उसकी नियति बन जाती है। 'आधे–अधूरे' नाटक में सावित्री की महत्त्वपूर्ण भूमिका है। मोहन राकेश ने इस नाटक में विभिन्न प्रकार की बातों को मिलाने की कोशिश की है। "इस नाटक के केवल केन्द्रीय स्त्री–पुरुष ही नहीं, बल्कि इस परिवार की परिधि को छूने वाले समाज के विभिन्न स्त्री–पुरुषों की, परिस्थितियों की भिन्नता के बावजूद, जीवन के स्वरुप और उनकी नियति की समानता के द्वारा राकेश 'प्रस्तावना' की सत्यता और उसकी सार्वभौमिकता को स्थापित करते है।"[5] समाज में मूल्य बदलते रहते हैं। सामाजिक मूल्य तात्कालिक सुविधा पर ही बनते–बिगड़ते है। इन बनते–बिगड़ते मूल्यों का सामना करते–करते जिंदगी से थक जाती है पर कभी मुक्त नहीं हो पाती है। सावित्री कहती है कि "मुझे भी पता है, पानी हो गया होगा। मैं जब भी किसी को बुलाती हूं यहां, मुझे पता होता है तुम यही सब बाते करोगे।"[6]

नाटक के प्रारम्भ में ही सावित्री के द्वारा स्त्री के व्यक्तित्व, संघर्ष, विघटन, जुड़ाव और अन्तर्द्वन्द्व की झलक मिलती है। "स्त्री कई–कुछ संभाले बाहर से आती है। कई कुछ घर का है, कुछ दफ्तर का है, कुछ अपना। चेहरे पर दिन–भर के काम की थकान है और इतनी चीजों के साथ चलकर आने की उलझन।"[7] सावित्री के द्वारा लाख बार कोशिश करने के बाद भी वह बाहरी और व्यक्तिगत जीवन में तालमेल नहीं बिठा पाती है। महेन्द्रनाथ भी उबकर कहता है कि "किसी माने में नहीं। मैं इस घर में एक रबड़ स्टैंप भी नहीं, सिर्फ एक रबड़ का टुकड़ा हूं बार–बार घिसा जाने वाला रबड़ का टुकड़ा। इसके बाद क्या कोई मुझे वजह बता सकता है, एक भी ऐसी वजह, कि क्यूं मुझे रहना चाहिए इस घर में।"[8] सावित्री के इस प्रकार के व्यवहार से एक चीज उभरकर सामने आती है कि वह अपने पति महेन्द्रनाथ से छुटकारा पाना चाहती है लेकिन सफल नहीं हो पाती है। फिर उसी को ठीक करने की कोशिश करने लगती है पर उसमें भी असफल हो जाती है। मोहन राकेश ने सावित्री की मनःस्थिति को दर्शाने के लिए माला को प्रतीक के रुप में अपनाया है। जब सावित्री जगमोहन से मिलने के लिए तैयार हो रही होती है तब उसकी माला टूटकर मोतियाँ बिखर जाती है जो उसकी वर्तमान स्थिति को दर्शाता है। जिस प्रकार मोतियाँ धागे में पिरोयी जाती है वैसे ही प्रत्येक स्त्री अपने परिवार के सदस्यों को पिरोकर रखने की भरपूर कोशिश करती है। जब सावित्री की माला टूट जाती है तो वह दूसरी माला उठाकर पहनती है जो यह इशारा करती है

कि सावित्री एक नई, जिदंगी अपनाने का निश्चय कर चुकी है तथा जगमोहन को अपना हमसफर बनाने का मानस बना चुकी है। उसी तरह जब वह जाने के लिए तैयार होती है तो उसे जूते की जोड़ी नहीं मिलती है तो फिर उसे भी वह ठुकरा देती है जो इस ओर इशारा करता है कि उसे अपने पति के साथ रहकर खुशी नहीं मिलती है लेकिन वह अपने पसंद के दूसरे आदमी को हमसफर भी नहीं बना पाती है। इस नाटक में आधुनिक मध्यमवर्गीय परिवार के आपसी विघटन एवं जुड़ाव, त्रासदी, द्वंद्व आदि की तस्वीर उभरकर सामने आती है, खासतौर से स्त्री–पुरुष के संबंधों को समझने की कोशिश की गई है।

शोध प्रविधि

इस शोध आलेख में लिखित सामग्री को आधार बनाया गया है। मोहन राकेश के नाटकों का अनुशीलन कर निष्कर्ष हेतु आवश्यक द्वितीयक स्त्रोत के आंकड़ों या सूचना हेतु आगमन–निगमन विधि, सापेक्षवादी ज्ञान में मीमांसा पद्यति द्वारा विश्लेषणात्मक, संश्लेषणात्मक, व्याख्यात्मक व अवधारणात्मक अध्ययन करते हुए उपर्युक्त विधियों में सूचनाएं प्राप्त हो सकेगी तथा शोध का निष्कर्ष निकाला जाएगा।

अध्ययन का उद्देश्य

इस शोध का उद्देश्य स्त्री–पुरुष के सम्बन्धों में नारी पुरुषों की दशा, पारिवारिक विघटन जैसी वर्तमान ज्वलंत समस्याओं का हल ढूंढना तथा व्यक्ति के जीवन के सूनापन, उदासीनता, कुंठा, व्यर्थता, निराशा जैसे बोधों का निराकरण कर स्त्री–पुरुष सम्बन्धों को रागात्मक, प्रेमात्मक, सहयोगात्मक बनाने का प्रयास होगा। यह शोध आलेख विद्यार्थियों, पाठकों व शोधार्थियों के लिए आधार का कार्य भी करेगा तथा साहित्य की श्रीवृद्धि भी होगी।

साहित्यावलोकन

मोहन राकेश ने तीन नाटक लिखे हैं, परन्तु इन पर बहुत अधिक शोधकार्य हुआ हे। एक–एक रचना पर शोध एवं पुस्तकें सामने आयी है। इनके नाटकों में युगीन समस्याएं विषय पर हुए शोध कार्य में आधुनिक समाज और समय की चिंताओं को उद्घाटित किया है। नारी चेतना, पारिवारिक विघटन, पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव आदि समस्याओं को रेखांकित किया है।

अब तक हो चुके कुछ शोध कार्य निम्नप्रकार हैं:–

1. सन् 2002 में सियाजीराव विवि, बड़ौदा से 'समय के निकष पर मोहन राकेश के नाटक' में आधुनिकता बोध को स्थापित किया है।
2. नई दिल्ली से प्रकाशित पुस्तक 'स्त्री पुरुष संबंधों के आइने में मोहन राकेश' लेखकरोज प्रकाश हैं।
3. डॉ0 क्षीरसागर कृत पुस्तक 'मोहन राकेश के नाटक', डॉ0 प्रतिभा येरेकार कृत' मोहन राकेश के नाटकों में नारी, डॉ0 उर्मिला मिश्र रचित 'आधुनिकता और मोहन राकेश' आदि पुस्तकों में मोहन राकेश के नाटकों की समीक्षा विभिन्न दृष्टियों से हुई है।

निष्कर्ष

मोहन राकेश ने अपने तीनों ही नाटकों का मूल कथ्य स्त्री–पुरुष सम्बन्धों में विघटन और जुड़ाव को ही रखा है। 'आषाढ़ का दिन' की स्त्री पात्र मल्लिका और कालिदास के सम्बन्धों में नियति के फेर और समय के कालचक्र के कारण जिंदगी भर अलगाव की स्थिति रही है। वहीं आधे–अधूरे की सावित्री और महेन्द्रनाथ तथा बिन्नी और मनोज के बीच भी एक बेहतर विकल्प न मिल पाने के कारण हमेशा ही अलगाव और द्वन्द्व की स्थिति रहती है। लहरों के राजहंस नामक नाटक में भी नंद और सुंदरी के माध्यम से दो विरोधी विचारधारा के आपसी टकराव के कारण उत्पन्न अलगाव की स्थिति को उजागर किया गया है। इन नाटकों से स्त्री–पुरुष के बीच के संबंधों को बेहतर ढ़ंग से समझने में सहायता मिलती है।

अंत टिप्पणी

1. *मोहन राकेश, आषाढ़ का एक दिन, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2015, पृष्ठ सं. 48*
2. *मोहन राकेश, लहरों का राजहंस, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. 59*
3. *मोहन राकेश, लहरों का राजहंस, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. 95*
4. *मोहन राकेश, लहरों का राजहंस, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2014, पृ. सं. 79*
5. *डॉ0 जयदेव तनेजा, मोहन राकेश, रंग शिल्प और प्रदर्शन, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2017, पृ. सं. 225*
6. *मोहन राकेश, आधे–अधूरे, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2018 पृ. सं. 37*
7. *मोहन राकेश, आधे–अधूरे, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2018 पृ. सं. 121*
8. *मोहन राकेश, आधे–अधूरे, राधाकृष्ण प्रकाशन दिल्ली, 2018 पृ. सं. 57*